International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अस्मिता, सत्ता की सैद्धांतिकी और हिंदी कहानी में द लत

-डॉ. रिम्पी खल्लन संह
अ सस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी वभाग
इन्द्रप्रस्थ महिला महा वद्यालय
स वल लाइन्स, दिल्ली-**110054**

अस्मिता का प्रश्न आधुनिक वमर्श का सबसे अ धक ज्वलंत और महत्त्वपूर्ण प्रश्न है क्यों क आधुनिकता ने मनुष्य को उसके अस्तित्व और उसकी पहचान के बुनियादी सवाल का उत्तर खोजने की प्र क्रया की ओर अग्रसर कया। यह सवाल केवल एक दार्शनिक सवाल ही नहीं था अ पतु सामाजिक और उससे भी अ धक राजनीतिक सवाल बनकर उभरा था। जैसे-जैसे आधुनिकता की प्र क्रया तीव्र होती गई, इसका दायरा भी वस्तृत होता गया और यह सवाल खुद की पहचान से भी आगे शक्ति और सत्ता की सैद्धांतिकी में अपने हिस्से की माँग की आवाज के रूप में उभरा। ऐसे में पूरे वश्व में उन लोगों की गति व धयाँ भी बढ़ीं जो हा शए के लोग थे और उन्होंने अपने अ धकारों की माँग को सामने रखा। अस्मिता का यह मुद्दा इक्कीसवीं सदी तक स्त्रियों और द लतों के लये एक बड़ा मुद्दा बन गया था और वश्व भर में स्त्रियों और दबे-कुचले लोगों ने आंदोलन कये। भारत में महाराष्ट्र से द लत आंदोलन के अनेक स्वर उठे।

भारत में स्त्री और द लत दोनों का ही उत्पीड़न प्राचीन काल से ही होता आया है। भारतीय समाज में जाति आदिकाल से ही महत्त्वपूर्ण भू मका निभाती रही है जैसा क स्वयं हज़ारी प्रसाद द् ववेदी कहते हैं क "भारत में छोटी से छोटी जाति भी अपने से छोटी जाति ढूँढकर निकाल लेती है।"[1] इस प्रकार जाति का प्रश्न प्रारंभ से ही एक जटिल प्रश्न था परंतु जब तक द लतों ने स्वयं अपनी अस्मिता पर आए संकट को नहीं समझा और उसकी वैचारिक सैद्धांतिकी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नि र्मत नहीं की तब तक द लत अस्मिता जैसी कोई भी चीज़ अस्तित्व में नहीं आई। अस्मिता का संकट अनुभव करना ही वास्तव में वह सोपान है जहाँ से संघर्ष की नींव पड़ती है। जाति प्रथा का वरोध पहले भी होता आया है। आदिकाल में बौद्ध धर्म इसके वरोध में उठ खड़ा हुआ और मध्यकाल में संतों ने भी इसका वरोध कया। 'कबीर' इसके सबसे बड़े उदाहरण हैं। कबीर ने धा र्मक कर्मकांडों तथा हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों की कुरीतियों का जमकर वरोध कया। आगे चलकर **19**वीं शताब्दी में भी जाति के नाम पर इस अत्याचार के वराध का सूत्रपात ज्योतिबा फूले से हो जाता है। ज्योतिबा फूले अपनी रचना 'गुलाम गरी' में लखते हैं- "शूद्रों को ब्राह्मणों की गुलामी से मुक्ति पाने के लये ब्राह्मणों के सभी धर्मग्रंथों व कर्मकांडों का निषेध करना होगा।"[2] स्वामी अछूतानंद ने 'आदि हिंदू पत्र' निकालकर द लत पत्रकारिता को उत्तर भारत में जन्म दिया था। यह पत्र द लतों पर होने वाले अत्याचारों और शोषण को दुनिया के सामने उजागर करने का काम करता था। यह पत्र उनकी अनेक समस्याओं पर लखता था और वर्तमान को सुधारने पर बल देता था। सन् **1975** में सारिका ने भी 'द लत साहित्य' वशेषांक निकाला। सन् **1973** में टाईम्स ऑफ इं डया ने भी इसके बारे में लखा जब बंबई में द लत पैंथर्स आंदोलन की भी शुरुआत हुई। इस आंदोलन ने द लत वमर्श को एक राजनीतिक वमर्श के रूप में और भी अ धक आगे बढ़ाया। इस दौरान बहुत सारी पछड़ी जातियों के लोग इस आंदोलन से जुड़ते चले गए। इसके बाद द लत साहित्य में अनेक आत्मकथाएँ भी लखी गईं। डॉ. ओमप्रकाश वाल्मी क मानते हैं क डॉ. अम्बेडकर की आत्मकथा 'मी कसा झालो' (मैं कैसे बना) से प्रेरणा लेकर द लत साहित्यकारों ने आत्मकथा वधा वक सत की है, जो समाज को दर्पण दिखाती है क वह समाज जिसमें हम रहते हैं, कतना अमानु षक है।"[3] द लत आंदोलन के बाद

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

द लत साहित्य में भी रोष के स्वर तीव्र होते चले गए। देवेंद्र कुमार की कहानी 'सरहाना' में सुरेश अपनी अस्मिता पर आए संकट को पहचानता है। वह जानता है क मश्र बाबू का सरहाने बैठने का मतलब ही है क वह उसके पताजी तथा उसके परिवार को अपने बराबर नहीं मानते हैं- "संस्कारों की ही तो बात है। मश्र बाबू के संस्कारों में यह बात कूट-कूट कर भरी हुई है क समाज में पं डतों का दर्जा सबसे बड़ा होता है....पर साथ ही यह बात भी भर दी गई है क हमारा दर्जा सबसे नीचे है। हमारी मान सकता को दो प्रकार से कसा गया है। एक तो उन्हें बड़ा मानो और दूसरे अपने को छोटा भी मानो।"[4] इस प्रकार द लत शोषण की इन गहरी जड़ों को द लत साहित्य उजागर करना शुरू करता है। साहित्य में प्रेमचंद ने द लतों के जीवन और उनके उत्पीड़न की त्रासद कथाएँ लखीं जिनमें 'ठाकुर का कुआँ' और 'सद्गति' तथा 'कफन' प्रमुख हैं। प्रेमचंद ने इनकी त्रासदी के वषय में तो लखा परंतु उनके यहाँ वरोध का स्वर उस रूप में नहीं मलता है। उनकी इन कहानियों में द लत की गहन पीड़ा तो उजागर होती है परंतु संघर्ष नहीं है। द लत अस्मिता के राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष का महत्त्वपूर्ण सोपान वह है जब कहानियों में पीड़ा की जगह रोष ले लेता है। महीप संह द्वारा संपादित पत्रिका सारिका से द लत कहानी लेखन की परंपरा वक सत होती दिखाई देती है। इससे पहले 'चाँद' पत्रिका का भी 'अछूत' अंक प्रका शत हुआ था परंतु सारिका के इस अंक ने एक नया तूफान ला दिया और द लत लेखन को लेकर लोग सोचने के लए ववश हो गए। द लत कहानी के सबसे महत्त्वपूर्ण लेखक और रचनाकार 'ओमप्रकाश वाल्मी क' हैं। इनके दो महत्त्वपूर्ण कहानी संग्रह 'घुसपैठिए' और 'सलाम' , जो क घुसपैठिए से पहले ही प्रका शत हो चुका था, हैं। हरपाल अरुष इनकी कहानियों के बारे में लखते हैं क "इनकी कहानियाँ, द लत समाज के भीतर कसमसाने वाले

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वरोध को, उभरकर आने वाली संवेदना को और सहज मान ली गई भारतीय जातिवादी संरचना की मनोवैज्ञानिकता को रेखां कत करती हैं।"[5]

ओमप्रकाश जी का अपनी कहानियों के बारे में कहना है क "उनकी संवेदनशीलता और जज़्बातों को गैर द लतों ने हमेशा अनदेखा कया है। उनके प्रति दुर्भाग्यपूर्ण व्यवहार कया है, उनकी मानवीय संवदेना के प्रति साहित्य का नजरिया भी नकारात्मक ही है। उनका सुख-दुख, उनकी पीड़ा साहित्य के लये त्याज्य ही रहा है। ले कन यह मेरी प्राथ मकताओं में है; समाज में स्था पत वद्रूपताओं को रेखां कत करना मैं ज़रूरी मानता हूँ। साथ ही द लत अस्मिता की पहचान मेरे लेखन की मूलभूत ज़रूरत है। उनकी कहानी 'सलाम' वर्षों से आ रही शोषणपूर्ण रस्म का वरोध करती है। इसमें कमल नाम का युवक अपने दोस्त के यहाँ बारात पर आया है पर चायवाला उसे यह सोचकर चाय देने से मना कर देता है क वह एक पछड़ी जाति की बारात में आया है। वह जब बताता है क वह ब्राह्मण है तो चाय वाला उसका मज़ाक उड़ाता है। गाँव के और लोग भी उसका अपमान करने लगते हैं- "ओ शहरी जनखे हम तेरे भाई हैं? साले जिबान संभल के बोल गांड में डंडा डाल के उलट दूँगा, अरे लौं डया को कसी गाँव में ब्याह देता तो म्हारे जैसे का भी कुछ भला हो जाता। कमल को लगा जैसे अपमान का घना बियाबान जंगल उग आया है। उसका रोम-रोम काँपने लगा।"[6] इसी संग्रह की कहानी "पच्चीस चौका डेढ़ सौ" यह रेखां कत करती है क द लतों के लये शक्षा कतनी आवश्यक है। बिना शक्षा के वे लगातार शोषण का शकार होते रहेंगे। द लत साहित्य में ओमप्रकाश वाल्मी क की ही लखी कहानी "घुसपैठिए" आरक्षण के प्रश्न से जुड़े मुद्दे को उठाती है क्यों क उच्च वर्ग यह मानता है क द लत आरक्षण के माध्यम से नौकरियों और व्यवस्था में घुसपैठ कर रहे हैं। इसमें भी शक्षा व्यवस्था के बीच द लतों के दर्द व शोषण को प्रका शत कया गया

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

है। बस में कसी भी पछड़े वर्ग के वद्यार्थी से मार-पीट सहज बात है- "इस बस में जो भी चमार स्टूडेंट है वह खड़ा हो जाए..... फर उसे ध कयाकर पछली सीटों पर ले जाया जाता है जहाँ पहले से बैठे सीनियर लात-घूँसों से उसका स्वागत करते हैं।"[7]

ओमप्रकाश वाल्मी क के साथ-साथ मोहनदास नै मशराय भी एक महत्त्वपूर्ण द लत लेखक हैं। उनकी कहानी 'हारे हुए लोग' में एक पढ़े लखे द लत अफसर को भी उच्च जाति के लोग मकान देने से मना कर देते हैं। इससे यह पता चलता है क शक्षा भी लोगों की सोच को बहुत बार बदल नहीं पाती। इस लये पढ़े- लखे द लत वर्ग को भी बहुत बार अपनी जाति छिपानी पड़ जाती है। द लत कथाकारों में बहुत अ धक स्त्री कथाकार तो अभी भी नहीं हैं परंतु फर भी कुछ द लत स्त्रियाँ भी लख रही हैं। इसमें रजतरानी मीनू, सुशीला टाकभौरे, अनीता भारती इत्यादि प्रमुख हैं। रजतरानी मीनू की कहानी "हम कौन हैं?" में 'धनेश्वर' और उमा अपनी बेटी के नाम के आगे 'सरनेम' नहीं लगाते। पर जब वह वद्यालय जाती है तो श क्षका उसका पूरा नाम पूछती है। इस तरह इस कहानी में अनेक महत्त्वपूर्ण बिंदु उभरते हैं जिनमें एक यह है- "आ खर जाति श क्षत और अ श क्षत सभी की जिज्ञासा का वषय क्यों है।"[8] इसी तरह उनकी कहानी 'फरमान' में भी यह बताया गया है क यह व्यवस्था द लतों के बच्चों के शक्षा अर्जित करने के सवाल का भी मज़ाक उड़ाती है। कर्मवीर के पता जब उसे वद्यालय में पढ़ने के लये ले जाते हैं तो प्रारंभ से ही स्कूल के शक्षक का व्यवहार नकारात्मक होता है और वह नहीं चाहता क कर्मवीर वद्यालय में आकर शक्षा ग्रहण करे। इससे बहुत अ धक गुस्सा होकर कहता है- "तेरे बस की नाय है पढ़नौ-लखनौ। अपने बाप से कहिए कल से पशु चराने तुझे अपने साथ ले जाए करे। वैसे तुझे पशु ही तो चुगाने है, पढ़ लखकर और का करेगो?"[9] इसी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तरह सुशीला टाकभौरे की कहानियों में द लत उत्पीड़न के स्वर गहनता से अ भव्यक्त होते हैं। सुशीला टाकभौरे के कहानी संग्रहों में 'संघर्ष' 'अनुभूति के घेरे' तथा 'टूटता वहम' इत्यादि प्रमुख हैं। उनकी कहानी ' स लया' की स लया जो क पछड़ी जाति से आती है, वह बहुत अ धक शक्षा अर्जित करना चाहती है ता क अपने समुदाय की स्थिति को बदल सके। वह अपने मन में सोचती है क मैं बहुत आगे तक पढ़ाई करूँगी, शक्षा के साथ अपने व्यक्तित्व को भी बड़ा बनाऊँगी। उन सभी परंपराओं के कारणों का पता लगाऊँगी, जिन्होंने उन्हें अछूत बना दिया है।"[10] उनकी कहानी 'दमदार' में सुमन जग्गू से प्रेमलता के प्रति हुए अमानवीय व्यवहार का बदल लेती है। यहाँ द लत स्त्री के प्रतिशोध को दिखाया गया है।

इस प्रकार द लत कहानी में द लत स्त्री कथाकारों का प्रवेश इसकी स्थिति को और भी अ धक सुदृढ़ बनाता है। इसके अतिरिक्त और भी अनेक महत्त्वपूर्ण कहानियाँ हैं जो द लत अस्मिता वमर्श के अनेक पक्षों को उजागर करती हैं जिनमें कालीचरण प्रेमी की 'खोल, अब्दुल बिस्मिल्लाह खाँ की 'खाल खींचने वाले' तथा श्योराज संह बेचैन की 'रावण' तथा 'शोधप्रबंध' इत्यादि कहानियाँ भी उल्लेखनीय है। द लत कहानियों या साहित्य पर 'भाषा' के पछड़ेपन के भी आरोप लगते रहे। इस वषय में अभय कुमार दुबे 'आधुनिकता के आईने में द लत' नामक अपनी पुस्तक में लखते हैं- "द लतों के सामने कोई दीवार भाषा की है तो कोई कला की है। राजनीतिक समता हा सल करने की तरफ बढ़ते हुए द लत समाज का बु द्धजीवी ज्ञानमीमांसा की कक्षा में खुद को सबसे पीछे की बेंच पर बैठा पाता है। उसकी चेतना खुद को अनुभवनिष्ठता और प्रति क्रयामूलक सौंदर्य शास्त्र की गली में बंद पाती है।"[11] यह महत्त्वपूर्ण है क द लत कहानियाँ अपने अनुभवों के सच की ताप में संकी हुई कहानियाँ हैं। इस लये आलोचकों को उसमें कहानी का शल्प नहीं

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अ पतु अनुभवों की सच्चाई और उससे पुष्ट होते वमर्श की ही पड़ताल अ धक करनी चाहिये क्यों क साहित्य केवल कला के लये नहीं अ पतु सामाजिक सरोकारों के लये और उससे जुड़े संघर्ष के लये लख जाता है। द लत साहित्य इन्हीं संघर्षों और पीड़ा तथा प्रतिरोध का जीवंत दस्तावेज है। द लत अस्मिता वमर्श अपने राजनीतिक और सामाजिक सरोकारों तथा संघर्षों के साथ निरंतर आगे बढ़ रहा है और अपने भीतर के अंत वरोधों के साथ भी साक्षात्कार करता है। आज जाति के साथ-साथ वर्ग की भी चंताएँ उत्पन्न हुई हैं। आ थक उन्नति के द्वारा वर्ग तो बदला जा सकता है परंतु जाति नहीं। इस लए आ थक रूप से वकास करने के बाद भी अनेक बार उन्हें शोषण का सामना करना पड़ता है। ओमप्रकाश वाल्मी क की कहानी 'भय' वर्ण और वर्ग के अंत वरोधों को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ उद्घाटित करती है। यहाँ द लतों की समस्या का एक व शष्ट आयाम उभर कर सामने आता है। यहाँ नौकरीपेशा मध्यवर्ग का दोगला चरित्र भी उभर कर सामने आता है। संभ्रांतता की ग्रं थ इतनी शक्तिशाली हो जाती है क व्यक्ति वर्ग को लेकर अतिरिक्त रूप से सचेत हो जाता है और ऊँची जातियों से मलने वाले अपमान के कारण वह अपनी जाति छिपाना चाहता है। वह मथ्या चेतना के कारण एक पेंडुलम की तरह लटकता रहता है। ओमप्रकाश वाल्मी क की ही कहानी 'प्रमोशन' भी द लतों के इसी दर्द को अ भव्यक्ति देती है जहाँ सुरेश भंगी की ज़िंदगी को छोड़कर मज़दूर हो जाता है और उसे लगता है क उसे अपनी जाति से छुटकारा मल गया परंतु भारतीय समाज में जाति और अस्पृश्यता से छुटकारा पाना इतना आसान नहीं है। जिस फैक्ट्री में वह मज़दूर की है सयत से काम करता है, वहाँ उसकी ड्यूटी दूध बाँटने की लगती है, पर लोग उसके हाथ से कोई भी खाने-पीने की चीज़ नहीं लेना चाहते। जब सुपरवाईज़र कारण पूछता है तो कहते हैं, क सुरेश स्वीपर है और उसके हाथ

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

से कुछ भी खाने पीने की चीज़ वे ग्रहण नहीं करेंगे। स्वयं द लतों के बीच भी सत्ता और शक्ति अर्जित करके बहुत बार स्वयं वे भी अपने लोगों का शोषण करने लगते हैं, इस लये शक्ति संतुलन की सैद्धांतिकी में अपने हिस्से की माँग के साथ-साथ यह भी महत्त्वपूर्ण है क उसे अर्जित करने के बाद द लत और शो षत लोग उसका प्रयोग कस दिशा में करते हैं? रामधारी संह दिवाकर की कहानी 'पोलटिस' इसी तथ्य को अ भव्यक्त करती है क एक द लत व्यक्ति का वर्ग बदलते ही वह अपनी ही जाति के लोगों का शोषण करने से नहीं चूकता। इस कहानी में 'चपरा सन बहू' जो एक द लत स्त्री है, अपने पति की मृत्यु के बाद पेंशन में काफी धन पाती है। उसे पेंशन योजना के अंतर्गत लाभ भी मलता है और काम पर ही पति की अचानक मृत्यु के कारण मुआवज़ा भी मलता है। इस पैसे को अर्जित करते ही वह अपनी ही जाति के लोगों को हेय दृष्टि से देखने लगती है। 'फु लया मौसी' जो क उसके गरीबी के दिनों की साथी है, वह उसे भुला देती है और उसके साथ एक नौकरानी जैसा व्यवहार करती है। वह उसे कहती है- "बहिना-बहिना कहती हूँ तो अगराती है। सर चढ़ गई है। खाने का तो उपाय नहीं है घर में मगर ऐंठन तो देखो। पैखाना धोने को कह दिया तो इज़्जत चली गई महारानी की।"[12] पु लया मौसी सोचती हैं क "बाबू बबुआनों से, कैथरोली की पटवारिन से और बभन टोली के टुटुन झा से आज न कल छुटकारा भी मल जाये ले कन अपने ही लोगों के बीच से अपनी जैसी दिखने वाली तुम्हारी जैसी पच्छक से कैसे छुटकारा मलेगा।"[13] इस प्रकार द लतों के भीतर भी शोषण के अनेक रूप देखे जा सकते हैं।

इसी प्रकार मुकेश मानस की कहानी 'सुअरवाड़ा' में भी एक पछड़ी जाति द्वारा दूसरी पछड़ी जाति को हीन बताने की होड़ का सूक्ष्म चत्रण हुआ है। इस कहानी में चौहान नौकरी पर जाते समय ऐसे मुहल्ले में से होकर गुज़रता

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

है जहाँ सबने सुअर पाल रखे हैं। उस मुहल्ले के सभी लोग द लत हैं। एक दिन जब वह वहाँ से गुज़र रहा होता है तो देखता है क दो लोग आपस में लड़ रहे थे। आपस में गाली गलौज हो रहा था और वे भी एक दूसरे को ईंट मार कर असभ्य भाषा में बात कर रहे थे- "साले भंगी के। अपनी औकात पर रह, तेरी माँ का, साले असल चमार का हूँ, चूहड़ा का नहीं।" चौहान वस्मित सा सुनता रह गया। चमार है या चूहड़, है तो द लत ही फर भी।"[14] वे लोग भी एक दूसरे को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। द लतों का संघर्ष जाति और वर्ग दोनों का संघर्ष है इस लये इस संघर्ष के सूक्ष्म रूपों को भी देखना अनिवार्य है। डॉ. अम्बेडकर के शब्दों में- "इस संघर्ष में तभी स क्रय हुआ जा सकता है जब सामाजिक संरचना में परिवर्तन की आवश्यकता को समझा जाए और समझा जाए क जो कुछ भी दोषपूर्ण है उसे बदला जाना चाहिए और उसे निश्चित न माना जाए।"[15]

आज का दौर जिसमें प्राचीन संरचनाएँ ध्वस्त हुई हैं, उस दौर में जाति का बने रहना इस बात की ओर संकेत करता है क आज भी जाति की राजनीति अत्यंत स क्रय है। कोई भी सभ्य समाज असमानता को लेकर वक सत नहीं हो सकता और न ही आगे बढ़ सकता है क्यों क असमानता व्यक्ति को उसके सहज वातावरण से अलग कर देती है, काट देती है। पछड़े वर्गों को मुख्यधारा में शा मल कया जाना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और यह भी आवश्यक है क केवल आ र्थक उन्नति के अवसर ही नहीं उन्हें समाज द्वारा सामाजिक समानता व प्रतिष्ठा भी प्राप्त हो। आज अस्मितामूलक संघर्ष का भीतरी ढाँचा और भी जटिल हुआ है क्यों क शोषण के आयाम उतने इकहरे व सरल नहीं हैं, जितने क दिखाई देते हैं। इसमें स्वयं द लतों के बीच के संघर्ष व द लत स्त्रियों के संघर्ष भी शा मल हैं जिन्हें भी उतनी ही सचेत दृष्टि व संवेदनशीलता के साथ देखे जाने की आवश्यकता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इस संदर्भ में आधुनिक चंतक और वचारक पाओलो फ्रेरे के वचार भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। वे मानते हैं क शोषण, उपेक्षा व अवमानना का आंतरिक ढांचा अत्यंत जटिल है इस लये जिसका शोषण होता है उसे यह प्रण लेना चाहिये क सत्ता का थोड़ा अंश भी यदि उसे मलेगा तो वह स्वयं उत्पीड़क की भू मका में नहीं आएगा। इस प्रकार- "उसकी समस्त ऊर्जा स्वयं उत्पीड़क बनने में नष्ट हो जाती है और लोग 'नये मनुष्य' को इस रूप में नहीं देख पाते हैं क यह उत्पीड़न से मुक्त होने की प्र क्रया में इस अंत र्वरोध व समाधान करने से पैदा होगा। उनके लये 'नये मनुष्य' का मतलब होता है स्वयं उत्पीड़क बन जाना।"[16] इस प्रकार द लत अस्मिता के संदर्भों के भीतर की अनेक परतों को भी सूक्ष्म दृष्टि से देखना और समझना आवश्यक है।

संदर्भ

1. हिंदी साहित्य और संवेदना का वकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृ. **16**
2. द लत वमर्श की भू मका, कंवल भारती, पृ. **106**
3. मुख्यधारा और द लत, ओमप्रकाश वाल्मी क, पृ. **19**
4. सरहाना, देवेन्द्र कुमार, द लत साहित्य **2000**, पृ. **315**
5. ओमप्रकाश वाल्मी क की कहानियों में सामाजिक लोकतंत्र, सं. हरदयाल संह अरुष, पृ. **7**
6. घुसपैठिए, ओमप्रकाश वाल्मी क, पृ. **12-13**
7. वही, पृ. **16**
8. **'हम कौन हैं?'** रजत रानी मीनू, पृ. **18**
9. वही, पृ. **21**
10. द लत महिला कथाकारों की च र्चत कहानियाँ, डॉ. कुसुम वयोगी, पृ. **22**
11. आधुनिकता के आईने में द लत, अभय कुमार दुबे, पृ. **115-116**
12. पोलटिस, रामधारी संह दिवाकर, वर्तमान कहानी साहित्य वशेषांक **1998**

13. वही

14. सुअरवाड़ा, मुकेश मानस, द लत साहित्य **2000**, पृ. **280**

15. भारतीय द लत समस्याएँ एवम् समाधान, डॉ. रामगोपाल संह, पृ. **9**

16. उत्पी ड़तों का शक्षाशास्त्र, अनुवाद रमेश उपाध्याय, पृ. **9**